४.३ संस्कृत

४.३.१ श्लोक

नीलाम्बुजश्यामकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥

भावार्थ:– नीले कमल के समान श्याम और कोमल जिनके अंग हैं, श्री सीता जी जिनके वाम भाग में विराजमान हैं और जिनके हाथों मं [क्रमशः] अमोघ बाण और सुन्दर धनुष है, उन रघुवंश के स्वामी श्री रामचन्द्र जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

४.४ हिन्दी

४.४.१ छंद

श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की॥
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी।
सुर काज धरि नरराज तनि चले दलन खल निसिचर अनी॥

भावार्थ:– हे राम! आप वेद की मर्यादाके रक्षक जगदीश्वर हैं और जानकी जी[आपकी स्वरुपभूता] माया हैं, जो कृपा के भण्डार आपकी रुख पाकर जगत् का सृजन, पालन और संहार करती हैं। जो हजार मस्तकवाले सर्पों के स्वामी और पृथ्वी को अपने सिर पर धारण करने वाले हैं, वही चराचर के स्वामी शेषजी लक्ष्मण हैं। देवताओं के कार्य लिये आप राजा का शरीर धारण करके दुष्ट राक्षसों की सेना का नाश करने के लिये चले हैं।

जित देखों तित स्याममई
स्याम कुंज बन जमुना, स्याम गगन घट छई है॥ [१]

४.४.२ चौपाई

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि संभु नचावनिहारे॥
ते न जानहिं मरमु तुम्हारा। आइ तुम्हहि को जाननिहारा॥

भावार्थ:– हे राम! जगत् दृश्य है, आप उसके देखने वाले हैं। आप ब्रह्मा, विष्णु और शंकर को भी नचाने वाले हैं। जब वे भी आपके मर्म को नहीं जानते, तब और कौन आपको जानने वाला है?

४.४.३ सोरठा

राम सरुप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह॥

भावार्थ:– हे राम! आपका स्वरुप वाणी के अगोचर, बुद्धि से परे, अव्यक्त, अकथनीय और अपार है वेद निरन्तर उसका 'नेति-नेति' कहकर वर्ण करते हैं।

४.४.४ कहानी

एक राजा और फकीर एक बहुत संकरी पगडंडी पर टकराए। अब दोनों रास्ता कैसे पार करें? जब एक झुककर रास्ता देता, तभी तो दूसरे को रस्ता मिलता। राजा ने फकीर से कहा कि हट कर मुझे रास्ता दो, क्योंकि मैं राजा हूँ। फकीर ने कहा, 'आप भूमि के राजा हैं तो मैं मन का राजा हूँ। पहले आप मुझे रस्ता दें।' इस पर राजा बोला, 'यदि तुम राजा हो तो तुम्हारे हथियार कहां हैं?' फकीर बोला, 'मेरे विचार मेरे हथियार हैं।' राजा ने पूछा, 'तुन्हारी सेना कहां हैं?'

'मेरी किसी से कोई दुश्मनी नहीं जो सेना रखूं।' फकीर ने जवाब दिया। राजा हैरान था। फिर उसने पूछा,'राजा के पास तो धन भी होता है, तुम्हारा धन कहां है।'

'मेरा ज्ञान ही मेरा धन है।'

'तुम्हारे नौकर-चाकर कहां हैं?

'मेरी इंद्रियां ही मेरी नौकर-चाकर हैं।

यह सब सुनकर राजा समझ गया कि वह कोई साधारण मनुष्य नहीं है। राजा झुका और उसने फकीर को रास्ता दे दिया।